①

BA-part-III

Sub- Pol. science

paper-VIII (special paper)

Group-A — International law and organisation.

Dr. Dhananjay Jha.
Assistant professor
(Guest faculty/part time)
L.S. College, Muz.
Mob- 8210688019.

Topic:— "International law as law."

Q.

(International law is the vanishing point of the Jurisprudence)

* ग्रोशियस (Grotius) को अन्तर्राष्ट्रीय विधि का जनक कहा जाता है। Father of International law — Grotius

आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय विधि के विकास के प्रारंभिक चरण से लेकर अब तक इस विषय पर विवाद रहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय विधि वास्तव में विधि है या नैतिकता से सम्बन्धित नियमों का संग्रह मात्र। यह विवाद 20 (बीसवीं) सदी के प्रारंभ तक उग्र रूप धारण किये हुए था। परन्तु पिछले कुछ दशकों में इस विवाद की उग्रता एवं महत्ता में भारी कमी आई है। आज तो सामान्य रूप में यह स्वीकार किया जाने लगा है कि अन्तर्राष्ट्रीय विधि वास्तविक अर्थ में विधि है। परन्तु यह कहना उचित प्रतीत नहीं होगा कि आज भी इस विवाद का पूर्णतः अन्त हो गया है अर्थात् यह निर्विवाद विषय है।

अन्तर्राष्ट्रीय विधि के प्रकृति के सम्बन्ध में दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं के कारण ऐसा विवाद देखने को मिलता है। विधि की विश्लेषणात्मक विचारधारा के प्रतिपादक एवं समर्थक अन्तर्राष्ट्रीय विधि के कानूनी स्वरूप को मानने से इन्कार करते हैं।

Scanned with CamScanner

(2) ऐसे लेखकों में हॉब्स (Hobbes), पफेनड्रॉफ (Pufendorf), बेन्थम (Bentham), ऑस्टिन (Austin) तथा हॉलैण्ड (Holland) आदि के नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। इनकी विचार धारा अन्तर्राष्ट्रीय विधि के वैधानिक स्वरूप पर बल देती है।

ऑस्टिन, हॉलैण्ड तथा उनके समान अन्य विद्वानों के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय विधि, विधि नहीं है क्योंकि इसमें विधि के तीन आवश्यक तत्व नहीं पाये जाते हैं। सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय विधि का निर्माण किसी सम्प्रभु राजनीतिक सत्ता द्वारा नहीं होता। दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय कानून के पीछे सम्प्रभु सत्ता की बाध्यकारी शक्ति नहीं होती। और तीसरे अन्तर्राष्ट्रीय विधि के नियमों का उल्लंघन करने वाले को दण्ड देने की कोई प्रभावकारी व्यवस्था नहीं पायी जाती है। अत: ऐसी बल रहित विधि को नैतिकता की संज्ञा दी जानी चाहिए न कि विधि की। हॉलैण्ड (Holland) ने यह मत व्यक्त किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय विधि अब तक विकास के जिस चरण में पहुंचा है उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अन्तर्राष्ट्रीय विधि अभी भी विधिशास्त्र के क्षेत्र से बाहर है। इसी को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने अपना मत व्यक्त किया है कि —

"International Law is the vanishing point of Jurisprudence." (Holland)

अन्तर्राष्ट्रीय विधि के प्रति जो दृष्टिकोण है, उसकी पुष्टि अन्तर्राष्ट्रीय विधि के सम्बन्ध में राज्यों के व्यवहार से भी होती रहती है। राष्ट्र संघ की असफलता और अन्तिम रूप से उसका अन्त इस बात का प्रमाण है कि राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का आधार शक्ति राजनीति है न कि अन्तर्राष्ट्रीय विधि।